Issue - 17
Vol. - 17 (April-June, 2017)

ISSN - 2322-0171

ICRJIFR,
IMPACT FACTOR
8.2856

UGC APPROVED

Peer Reviewed & Referred
International Research Journal of
Higher Education
Quarterly Bilingual

A FREE LANCE

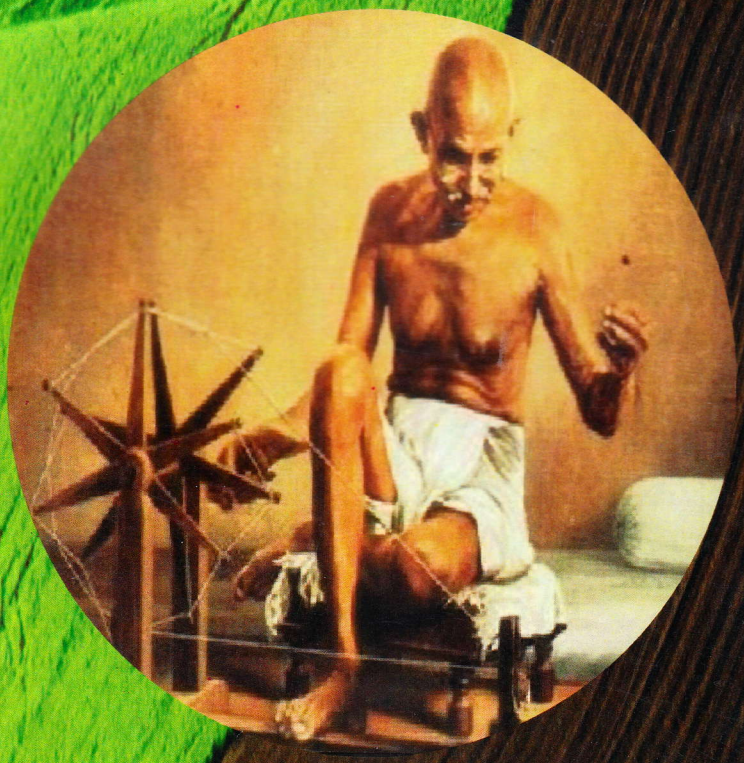

Editor-in-Chief
Dr. Amit Jain
M.Com, Ph.D, MSW, LLB

An official publication of
Amit Educational and Social
Welfare Society (Regd.)
Firozabad (U.P.)

ISSN - 2322-0171

"संयुक्त एवं एकल परिवार के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन"

डॉ. आभा सिंह
सहायक आचार्या, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ (राज.)

परिवार का स्वरूप भिन्न–भिन्न प्रकार का होता है जिसमें हमने एकल परिवार या संयुक्त परिवार को मुख्य माना है।

परिवार का शिक्षा में भी अपना विशेष योगदान है। परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है। भारतीय परिवारों में सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्धों का बालकों के व्यक्तित्व, शिक्षा, भावनाओं तथा शिक्षा उपलब्धियों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता हैं।

बालक का वर्तमान परिवेश उसका भविष्य तय करता है। एक बीज में फल–फूल पत्तियों तथा अन्य बीजों को उत्पन्न करने की क्षमता एवं संभावना निहित होती है। परन्तु यह तभी साकार होगा जब उसे पानी, गर्मी खाद, हवा उपयुक्त मात्रा में और ठीक समय पर मिलती रहें। इसी प्रकार बालक में निहित विकास की संभावनाओं का विकास भी तभी हो पाता है जब वांछनीय एवं उपयुक्त वातावरण की परिस्थितियां उपलब्ध हों। अन्तनिर्हित शक्तियां तब तक जागृत एवं विकसित नहीं होगी जब तक की वातावरण की परिस्थितियों के माध्यम से इन्हें उत्तेजित एवं क्रियारत नहीं किया जाता। वातावरण ही बालक की अन्तनिर्हित शक्तियों को विकसित रूप प्रदान करता है। परन्तु कोई भी ऐसा विकास वातावरण के माध्यम से भी संभव नहीं होता जो बालक के मूल स्वभाव में निहित न हो। इस प्रकार ये दो तत्व आंतरिक एवं बाह्य (आनुवांशिकता एवं वातावरण) के कारण बच्चे में आत्मविश्वास का संचार होता है जिसके कारण वह अपना प्रत्येक कार्य उत्साहपूर्वक करने का प्रयास करता है। अपनी रूचि के कार्य करने से पढ़ाई के कारण होने वाली नीरसता कम हो पाती है जिससे वह दुश्चिंता, कुण्ठाओं और हीन भावनाओं से ग्रस्त होने से बचता है।

समस्या का औचित्य :

जीवन के प्रथम वर्ष में बालक पूर्णरूप से अपने माता–पिता एवं समाज के दूसरे सदस्यों पर निर्भर रहता है। किशोर बनते बनते उसकी शारीरिक, मानसिक एवं सांवेगिक क्षमताएं पूर्ण विकसित हो जाती है। उसे कल्पना लोक एवं यथार्थ की दूनिया का काफी ज्ञान हो जाता है। यह ज्ञान उसे अपने माता–पिता एवं सामाजिक बन्धनों से मुक्ति के लिए प्रेरित करता है। वह स्वतन्त्र होना चाहता है। उसकी इस प्रवृत्ति को कुछ मनोवैज्ञानिक "मनोवैज्ञानिक जागृति" कहते हैं। जिसका अर्थ है कि बालक स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता है व अपने निर्णय स्वयं लेना चाहता है। भविष्य की योजना तथा अपने जीवन को स्वयं संवारना चाहता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि उसे अभिभावकों एवं अध्यापकों के सहयोग की आवश्यकता नहीं है। बल्कि प्यार, स्नेह, सहानुभूति आदि सांवेगिक सन्तुष्टि का एकमात्र आधार उसके लिए यह ही है। किशोर समझने लगता है कि वे सांसारिक दायित्वों के निर्वहन में सक्षम हो गये है तथा इन्हें प्रौढ़ों की तरह सम्मान दिया जाये, लेकिन समाज की नजरों में ये अभी परिपक्व ही है। यह स्थिति उसे एक द्वन्द्व में धकेल देती है। फलतः किशोर को, कहीं बालक का तो कहीं प्रौढ़ का अभिनय करना पड़ता है।

सांस्कृतिक दृष्टि से किशोर न तो बालक ही होता है और न उसे प्रौढ़ कह सकते हैं। प्रौढ़ उसे बच्चा समझते हैं और बच्चे उसे अपने से बड़ा समझते हैं।

किशोर के मन में उलझन भरी कठिन परिस्थिति के कारण शर्मीलापन, झिझक, संकोच तथा अस्वीकार किये जाने का भय एवं भविष्य की चिन्ता बराबर बनी रहती है। वस्तुतः यह किसी भी प्रदेश में न होने की स्थिति भी उसके मानसिक द्वन्द्व का कारण बनती है।

बदलते सामाजिक वातावरण में परिवारों के स्वरूप भी बदल रहे हैं। एकल परिवारों की संख्या लगातार बढ़ रही है। आजकल बहुत से परिवार एकांकी परिवार बनकर ही अलग–अलग रहना चाहते हैं। जिससे बच्चों का लालन–पालन अधिक उन्मुक्त वातावरण में हो सके। लेकिन एकांकी परिवारों में भी कई बार सूनापन रहता है। विशेषकर जबकि पति–पत्नी दोनों बाहर नौकरी करने जाते हैं। ऐसे परिवारों में किसी बड़े–बूढ़ों या अन्य सगे सम्बन्धियों के न होने के कारण बालकों का न तो स्वस्थ सामाजिक विकास होता हो पाता है और न उनके ज्ञान की समुचित अभिवृद्धि हो पाती है।

हमारे अधिकांश ग्रामीण परिवार संयुक्त होते हैं। जिनमें बच्चों को अत्यधिक स्नेह मिलता है उनमें भाइचारे सहयोग की भावना विकसित होती है। उनका सामाजिकरण होता है। बच्चों में सबसे समायोजित होने की क्षमता विकसित होती है। उनमें एक सबके लिए व सब एक के लिए की भावना विकसित होती है।

संयुक्त परिवारों में भी कई दोष है जैसे संयुक्त परिवार में बालकों को एक निरंकुश सत्ता के अधीन रहना पड़ता है। परिवार के सदस्यों की संख्या अधिक होने के कारण बालकों पर उचित ध्यान नहीं दिया जाता। प्रतिभाशाली बालकों की स्वास्थ्य व शिक्षा की आवश्यकताओं पर पूरी तरह से ध्यान नहीं दिया जाता। ऐसे परिवारों में आपसी ईर्ष्या, द्वेष तथा झगड़ों के कारण आजकल प्रायः क्षुब्ध वातावरण रहता है। यही कारण है कि आजकल बहुत से परिवार एकांकी बनते जा रहे हैं।

शोधकर्त्री ने अपनी समस्या के क्षेत्र में एकल एवं संयुक्त परिवार का चयन इस कारण किया है कि बालक का व्यवहार उसके पारिवारिक वातावरण से बहुत अधिक प्रभावित होता है। यदि परिवार का वातावरण अच्छा है। घर के सदस्य एक–दूसरे का सम्मान करते हैं एक–दूसरे के कार्य में सहयोग करते हैं। बच्चों पर अपनी महत्वाकांक्षा थोपते नहीं है। आपस में मिलजुलकर एक–दूसरे की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। ऐसे परिवारों के बच्चों का सांवेगिक सामाजिक विकास उच्च स्तर का होता है तथा उनमें समायोजन की क्षमता अधिक पायी जाती है। इस शोधकार्य द्वारा एकल एवं संयुक्त परिवार में रहने वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता का विश्लेषण कर उनके व्यवहार की समस्या को दूर किया जा सकता है।

समस्या अभिकथन :

''संयुक्त एवं एकल परिवार में रहने वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन''

शोध के उद्देश्य :

1. संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. एकल परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।
3. संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्रों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।
4. संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्राओं की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।
5. संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना :

1. संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं कर समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. एकल परिवार के छात्र–छात्राओं की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्रों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
4. संयुक्त एवं एकल परिवार की छात्राओं की समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
5. संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

चर :

1. स्वतन्त्र चर : एकल एवं संयुक्त परिवार
2. आश्रित चर : समायोजन क्षमता

न्यादर्श :

जोधपुर संभाग के तीन जिले के 600 विद्यार्थी।

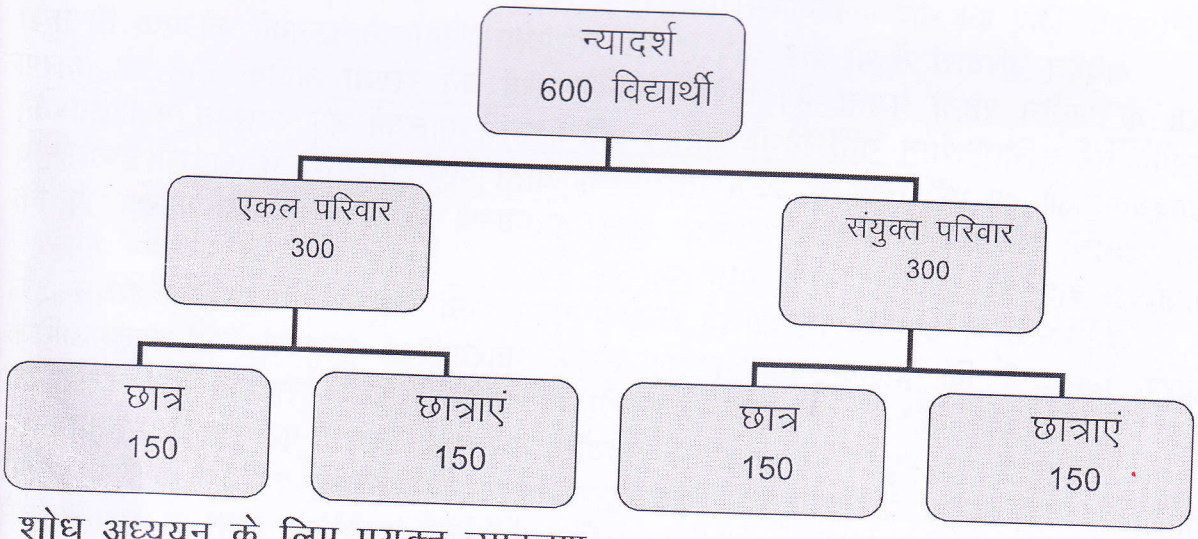

शोध अध्ययन के लिए प्रयुक्त उपकरण :

विद्यालयी बालकों की समायोजन मापनी AISS (प्रो. ए.के.पी. सिन्हा व प्रो. आर.पी. सिंह)

शोध अध्ययन में प्रयुक्त विधि – सर्वेक्षण विधि

सांख्यिकी : t मान परीक्षण

निष्कर्ष :

परिकल्पना : 1 – संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्र छात्राओं की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका–1

समायोजन क्षेत्र	N छात्र	छात्राएं	मध्यमान		प्रमाप विचलन		t मूल्य	सार्थकता
			छात्र	छात्राएं	छात्र	छात्राएं		
संवेगात्मक समायोजन	150	150	3.96	3.12	3.86	2.52	2.33	0.05 स्तर अस्वीकृत

सामाजिक समायोजन	150	150	7.67	7.38	2.83	2.17	1.03	स्वीकृत
शैक्षिक समायोजन	150	150	5.19	4.75	3.87	3.03	1.15	स्वीकृत
पूर्ण समायोजन क्षमता	150	150	16.83	15.26	9.17	6.32	1.74	स्वीकृत

df = N-2 (300-2) = 298

df = 298 के लिए t का अपेक्षित मान

0.05 सार्थकता स्तर पर – 1.96

0.01 सार्थकता स्तर पर – 2.58

तालिका 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि संयुक्त परिवार के छात्रों में छात्राओं से संवेगात्मक समायोजन अधिक पाया जाता है तथा सामाजिक व शैक्षिक समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता। छात्र व छात्राओं के पूर्ण समायोजन क्षमता में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना : 2 –एकल परिवार के छात्र–छात्राओं की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका–2

समायोजन क्षेत्र	N छात्र	छात्राएं	मध्यमान		प्रमाप विचलन		t मूल्य	सार्थकता
			छात्र	छात्राएं	छात्र	छात्राएं		
संवेगात्मक समायोजन	150	150	4.66	3.16	4.22	2.95	3.56	अस्वीकृत
सामाजिक समायोजन	150	150	7.56	7.56	2.86	2.86	0	स्वीकृत
शैक्षिक समायोजन	150	150	5.64	4.60	3.85	3.15	2.56	0.05 अस्वीकृत 0. 01 स्वीकृत
पूर्ण समायोजन क्षमता	150	150	17.87	15.33	9.61	7.33	2.58	अस्वीकृत

तालिका 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि एकल परिवार के छात्रों का संवेगात्मक समायोजन छात्राओं की तुलना में अधिक होता है तथा सामाजिक समायोजन में कोई अन्तर नहीं पाया जाता वही शैक्षिक समायोजन छात्रों में अधिक पाया जाता है। पूर्ण समायोजन छात्रों में छात्राओं से अधिक पाया जाता है।

परिकल्पना : 3 संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्रों के समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका–3

समायोजन क्षेत्र	N छात्र	छात्राएं	मध्यमान		प्रमाप विचलन		t मूल्य	सार्थकता
			छात्र	छात्राएं	छात्र	छात्राएं		

संवेगात्मक समायोजन	150	150	3.96	4.66	3.86	4.22	1.59	स्वीकृत
सामाजिक समायोजन	150	150	7.67	7.56	2.83	2.89	0.35	स्वीकृत
शैक्षिक समायोजन	150	150	5.19	5.64	3.87	3.85	1.07	स्वीकृत
पूर्ण समायोजन क्षमता	150	150	16.83	17.87	9.17	9.61	0.96	स्वीकृत

तालिका 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्रों का संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक, शैक्षिक समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्रों के समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना : 4 संयुक्त एवं एकल परिवार की छात्राओं के समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका–4

समायोजन क्षेत्र	N छात्र	छात्राएं	मध्यमान		प्रमाप विचलन		t मूल्य	सार्थकता
			छात्र	छात्राएं	छात्र	छात्राएं		
संवेगात्मक समायोजन	150	150	3.12	3.16	2.52	2.95	0.13	स्वीकृत
सामाजिक समायोजन	150	150	7.38	7.56	2.21	2.54	0.69	स्वीकृत
शैक्षिक समायोजन	150	150	4.75	4.60	3.03	3.15	0.44	स्वीकृत
पूर्ण समायोजन क्षमता	150	150	15.26	15.33	6.32	7.33	0.08	स्वीकृत

तालिका 4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि संयुक्त एवं एकल परिवार की छात्राओं का संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक, शैक्षिक समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। संयुक्त एवं एकल परिवार की छात्राओं के समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना : 5 संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका–5

समायोजन क्षेत्र	N छात्र	छात्राएं	मध्यमान		प्रमाप विचलन		t मूल्य	सार्थकता
			छात्र	छात्राएं	छात्र	छात्राएं		
संवेगात्मक समायोजन	300	300	3.54	3.91	3.19	3.58	1.85	स्वीकृत
सामाजिक समायोजन	300	300	7.52	7.56	2.52	2.71	0.2	स्वीकृत

शैक्षिक समायोजन	300	300	4.97	5.12	3.45	3.15	0.62	स्वीकृत
पूर्ण समायोजन क्षमता	300	300	16.04	16.6	7.74	8.47	0.87	स्वीकृत

तालिका 5 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों का संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक, शैक्षिक समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध से प्राप्त निष्कर्ष :

1. संयुक्त परिवार के छात्रों का संवेगात्मक समायोजन संयुक्त परिवार की छात्राओं की तुलना में आंशिक रूप से अधिक होता है। किन्तु संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं के सामाजिक, शैक्षिक एवं पूर्ण समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. एकल परिवार के छात्रों का संवेगात्मक समायोजन शैक्षिक एवं पूर्ण समायोजन छात्राओं की तुलना में अधिक होता है किन्तु एकल परिवार के छात्र–छात्राओं के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्रों के समायोजन क्षमता (संवेगात्मक, सामाजिक, शैक्षिक व पूर्ण समायोजन) में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. संयुक्त एवं एकल परिवार की छात्राओं के समायोजन क्षमता (संवेगात्मक, सामाजिक, शैक्षिक व पूर्ण समायोजन) में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता (संवेगात्मक, सामाजिक, शैक्षिक व पूर्ण समायोजन) में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सन्दर्भ ग्रंथ :

1. करलिंगर, एफ.एन., फाउण्डेशन ऑफ विहैवियरल रिसर्च, न्यूर्याक, हाल्ट सिचार्ड एण्ड विनसण्ट।
2. गैरिट, एच.ई., स्टेटिस्टिक इन साइकॉलोजी एण्ड एजुकेशन न्यूर्याक
3. जनशिल्ड, ए.टी., किशोर मनोविज्ञान, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली
4. वशिष्ठ विजेन्द्र कुमार, शिक्षा मनोविज्ञान, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली